ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; SP7: 72-73

डा० संगीता कुमारी
इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

Correspondence
डा० संगीता कुमारी
इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

(Special Issue-7)
"International Conference on Science and Education: Problems, Solutions and Perspectives"
(3rd June, 2019)

यूनानी–रोमन इतिहास की अवधारणा

डा० संगीता कुमारी

सारांश
इतिहास में व्यक्तिगत कार्य का विशेष महत्व है। एक व्यक्ति के कार्य के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण मानव समाज सुख तथा दुरूख भोगता है। इसके अतिरिक्त हेरोडोट्स ने प्राकृतिक नियमों को इतिहास में प्रधानता दी है। उसने इतिहास में मानवीय कार्यों को स्वीकार किया है। मानवीय कार्यों पर प्रकृति, भौगोलिक परिस्थिति तथा वातावरण का प्रभाव स्वाभाविक है। इतिहास जनक के रूप में उसने सर्वप्रथम इतिहास के वैज्ञानिक स्वरूप का प्रतिपादन किया है।

Keywords: यूनानी–रोमन इतिहास, भौगोलिक परिस्थिति

प्रस्तावना
यूनानी–रोमन इतिहास की अवधारणा प्राचीन संस्कृतियों में यह अवधारणा पायी जाती है कि मानव–इतिहास एक पूर्वांकित योजना के अनुसार अग्रसर होता जा रहा है। इसका लक्ष्य निश्चित है, लक्ष्य प्राप्ति एक विकास–प्रक्रिया में आने वाली अवस्थाएं भी पूर्वांकित हैं। इस अवधारणा से स्पष्टतः मानव–इतिहास के विगत अतीत तथा अनागत भविष्य के विषय में एक परिकल्पनात्मक चित्र के निर्माण में अधिकांश लोगों की रुचि दिखाई देती है। इस प्रकार की अवधारणा के दो प्रमुख तत्व हैं–

1. मानव– समाज निरन्तर पतन का इतिहास है। मानव–समाज अधिकाधिक दुरूख तथा नैराश्य की ओर बढ़ रहा है। अंत में इसका विनष्ट होना प्रायः निश्चित है।
2. मानव–इतिहास अकुशल से कुशल की ओर प्रवर्तमान है। सही अर्थ में यह विकासशील है। यह निरन्तर अत्यधिक न्याय, सुविधा तथा सुख की ओर बढ़ रहा है।

यूनानी–रोमन इतिहास अवधारणा में हेसियड का युग–चक्र सिद्धांत सर्वथा महत्वपूर्ण है। उसने चार युगों की कल्पना की है और नामकरण चार धातुओं के नाम पर रखा है–

1. स्वर्ण युग–इस युग में क्रोनोस का स्वर्ग में शासन था। मनुष्य स्वयं देवताओं के साथ कार्य करता था। पृथ्वी स्वतरू उन्हें सभी श्रेयस्कर वस्तुएँ प्रदान करती थीं।
2. रजत युग–युग चक्र इतिहास का यह दूसरा चरण है। पूर्ववर्ती युग की अपेक्षा मनुष्य हीनतर अवस्था में पहुँच गया। धीरे–धीरे वह विनाश की ओर अग्रसर होता जा रहा है। पारस्परिक संघर्ष में व्यस्त रहने के कारण देवताओं की आराधना के प्रति उदासीन होने लगा।
3. कांस्य युग–युग चक्रवादी अवधारणा का यह तृतीय चरण है। मानवीय गुणों में उत्तरोत्तर ह्रास इस युग की विशेषता है। मनुष्य शक्तिशाली था, परन्तु भाव से सर्वथा शून्य था। उसका भवन तथा अस्त्र–शस्त्र कांस्यनिर्मित होते थे। पारस्परिक मारकाट, कलह तथा संघर्ष इस युग की विशेषता रही है।
4. लौह युग–यह युग–चक्र सिद्धांत का अंतिम चरण है। इस युग के वीर पुरुष अपने पूर्वजों की तुलना में अधिक वीर और न्यायप्रिय थे। इस युग में ट्राय तथा थेवीज के युद्धों में वीर पुरुषों ने भाग लिया। वर्तमानकालिक लौह युग में श्रम तथा दुरूख से मानव समाज मुक्त नहीं है।

युगों के चक्रात्मक विकास का यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि जैसे रात–दिन, चन्द्रमा का वर्द्धमान तथा क्षयमान पक्ष अथवा एक ऋतु के पश्चात् दूसरे का अनुगमन होता रहता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में भी परिवर्तन की चक्रात्मक प्रक्रिया चलती रहती है।
कॉलिंगवुड ने हेसियड की युग–चक्रवादी अवधारणा की कटु आलोचना की है और इसे अनैतिहासिक अवधारणा की संज्ञा दी है। धार्मिक विचारों पर आधारित कथाएं ऐतिहासिक नहीं, अपितु काल्पनिक

हैं। यूनानी अवधारणा के अनुसार इतिहास मात्र धर्म पर आधारित कथा नहीं, अपितु एक शोध है जिसका उद्देश्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है। इस अवधारणा का स्वरूप धार्मिक नहीं है, बल्कि मानवतावादी है, क्योंकि इतिहास का संबंध मानवीय क्रियाओं से है। हेरोडोटस की इतिहासअवधारणा मानवतावादी थी। कॉलिंगवुड ने लिखा है, उनके इतिहास–लेखन का एकमात्र उद्देश्य भावी पीढी के लिए अतीत के मानवीय कार्यों को सुरक्षित रखना था।

मानवीय कार्य–व्यापार भाग्य द्वारा नियंत्रित होते हैं। देवतागण भी भाग्य के नियंत्रण से नहीं बच सकते। हेरोडोटस ने स्वीकार किया है कि इतिहास कार्य वर्तमान ईश्वरीय इच्छा द्वारा नियंत्रित होती है।

कॉलिंगवुड के अनुसार हेरोडोट्स इतिहास के जन्मदाता हो सकते हैं, परन्तु मनोवैज्ञानिक इतिहास के जनक थ्यूसिडिडीज हैं। यूनानी इतिहास की अवधारणा में थ्यूसिडिडीज, हेरोडोटस का उत्तराधिकारी नहीं कहा जा सकता है। हेरोडोटस की रुचि घटनाओं में रही है। थ्यूसिडिडीज ने उनके माध्यम से कुछ स्पष्ट नियमों का प्रतिपादन किया है। इन नियमों का स्वरूप शाश्वत है और मानव के लिए बोधगम्य है। थ्यूसिडिडीज ने अधिक आशावादिता को पतन का कारण स्वीकार किया है। भाग्य की अपेक्षा इतिहास की गति को परिवर्तित करने में मानव–इच्छा की प्रबलता के द्वारा इस विचार की अभिव्यक्ति करायी गयी है। इन्होंने इतिहास में नियतिवाद तथा अवश्यंभाविता के सिद्धांत को अस्वीकार किया है। थ्यूसिडिडीज ने कहा है कि घटना अवश्यंभावित नहीं होती है। यदि मनुष्य को अवश्यंभाविता का ज्ञान होता तो भावी घटना से अपनी रक्षा का उपाय करता। थ्यूसिडिडीज के अनुसार–इतिहास की विभिन्नता का प्रमुख कारण मानवीय मस्तिष्क होता है। युगचक्रवादी प्रभाव के कारण उसने उत्थान तथा पतन को इतिहास की गति स्वीकार किया है। इतिहास की अभिव्यक्ति सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की प्रक्रिया में होती है। उसने प्लेटो के सत्यं शिवं सुन्दरम् को इतिहास का चरम लक्ष्य स्वीकार किया है।

रोमन इतिहासकार पोलिवियस ने इतिहास अवधारणा के सार्वभौमिक स्वरूप को स्वीकार किया है। अतीत का वर्तमान में सातत्य ही इतिहास है। रोमन साम्राज्य के उत्थान के माध्यम से उसने सम्पूर्ण विश्व को एक शासक के नियंत्रण में लाने का स्वप्न देखा था। विश्व साम्राज्य की कल्पना सबसे पहले पोलिवियस ने की थी। इसे उसने भाग्य का परिणाम नहीं, बल्कि मानवीय इच्छा के परिणाम के रूप में देखा था। उसने भी इतिहास के चक्रवादी स्वरूप को मान्यता प्रदान की है। प्राकृतिक नियम के अनुसार उत्थान, विकास, पतन तथा अंत का क्रम इतिहास की गति को प्रभावित करता है। पोलिवियस ने अतीत के अध्ययन को चरित्र–सुधार के लिए आवश्यक तथा उपयुक्त बताया है। उसने मानवीय दुःख–सुख को भाग्य के प्रभाव की अपेक्षा काल तथा परिस्थितियों के परिणाम को मान्यता दी है। ऐतिहासिक घटनाएँ मानवीय चरित्र तथा इच्छाओं के अनुसार होती है। कार्य–कारण के संबंध में उसकी अवधारणा है कि प्रत्येक घटना के कुछ संभावित अथवा असंभावित कारण होते हैं। रोमन साम्राज्य के पतन का कारण रोमवासियों का विलासप्रिय जीवन था।

लिवी की इतिहास–अवधारणा में नैतिकता की प्रधानता है। इतिहास का उद्देश्य नैतिक शिक्षा प्रदान करना है। उसने समीप के अतीत की अपेक्षा सुदूर अतीत के अध्ययन को आवश्यक बताया, क्योंकि सुदूर अतीत में नैतिकता तथा भ्रष्टाचार के उदाहरण मिलते हैं। उसका दृष्टिकोण मानववादी था।

निष्कर्ष

टेसीटन रोमन के पतनकाल का प्रतिनिधित्व करता है उसको रचना तथा विचार पर इस पतन का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। अच्छे तथा बुरे तत्वों का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों के संघर्ष को प्रस्तुत करना ही उसके इतिहास–लेखन का तात्पर्य था। टेसीटन का चरित्र–चित्रण ऐतिहासिक यथार्थता के विपरीत है। कॉलिंगवुड के अनुसार उसका इतिहास रोमन ऐतिहासिक अवधारणा का मरुस्थल है। टेसीटन के अनुसार नैतिक क्रांतियाँ, भी सामाजिक तथा राजनैतिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप होती है। परिवर्तनशील–प्रकृति की ऋतु परिवर्तन की तरह ऐतिहासिक घटनाएँ होती हैं।

संदर्भ–सूची

1. एस.ए. नागोरी– विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ
2. ई. श्रीधरन– इतिहास लेख एवं पाठ्य पुस्तक 500ई.पू0. से 2000 तक
3. प्रो. राधेशरण– इतिहास और इतिहास लेखन
4. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव– इतिहास लेखन अवधारणा विधाएँ एवं साधन
5. मानिक लाल गुप्ता– इतिहास लेखन, धारणाएँ एवं पद्धतियाँ